नया ज्ञानोदय

जून-जुलाई 2025
मूल्य : 50 रुपये

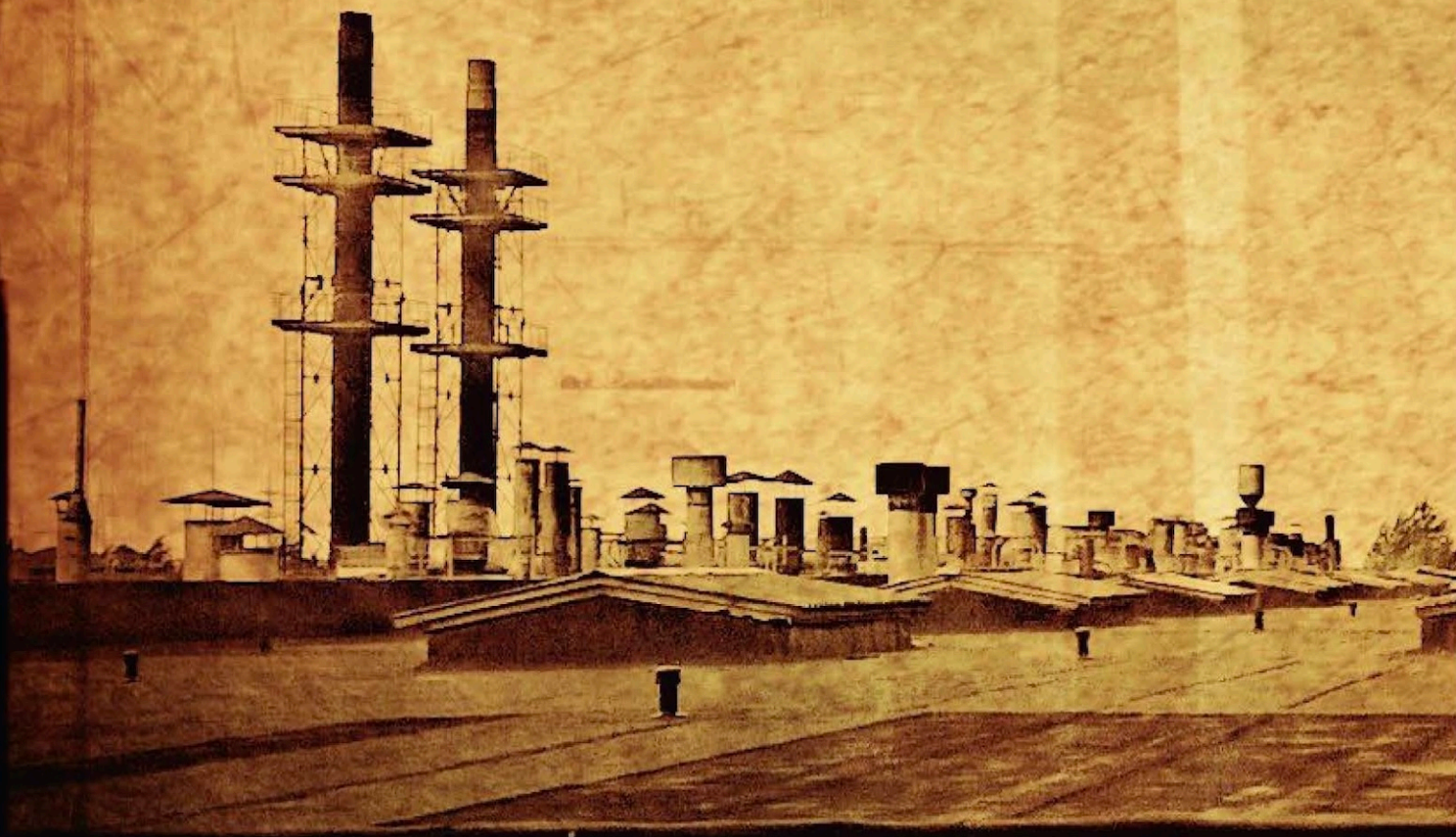

भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

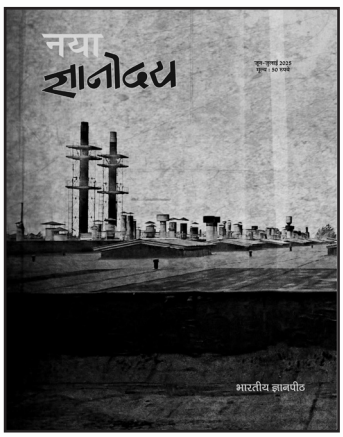

अंक : 233
जून-जुलाई 2025

सम्पादक

मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक

महेश्वर, प्रभाकिरण जैन

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com
bookclub@jnanpith.net
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor : Madhu Sudan Anand
Language : Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,

मूल्य : 50
50 रुपये + 16 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :
वार्षिक (6 अंक) : 400 रुपये (साधारण डाक खर्च सहित)
वार्षिक (6 अंक) : 520 रुपये (रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण-चित्रः अंतरिक्ष, आवरण व साज-सज्जा : महेश्वर, भीतरी रेखांकन : आस्था चौहान

प्रतिष्ठा में,
प्रसार अधिकारी, नया ज्ञानोदय
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इंस्टिट्यूशनल एरिया, लोधी रोड,
नयी दिल्ली-110 003

नया ज्ञानोदय

सदस्यता-प्रपत्र

महोदय, द्वैमासिक पत्रिका का नियमित सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क.....रु. मनीआर्डर/ बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज रहा/रही हूँ। कृपया ज्ञानोदय के अंक मुझे .....से..... तक नियमित रूप से भिजवाते रहें।

नया ज्ञानोदय के नाम भेजी गई राशि का विवरण—

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक..... दिनांक.....
जारी करने वाले बैंक का नाम..... शाखा.....

व्यक्तिगत/संस्थान विवरण

नाम.....
पता.....
.....
.....
.....पिनकोड.....
फोन नं.....ई-मेल.....

सदस्यता शुल्क

एक अंक : 50 रुपये + 16 रुपये (डाक खर्च)
साधारण ग्राहक से (6 अंक) : 400 रुपये वार्षिक (साधारण डाक से)
पंजीकृत ग्राहक से (6 अंक) 520/-रुपये वार्षिक (रजिस्टर्ड डाक से)

बैंक ड्राफ्ट/चैक—भारतीय ज्ञानपीठ के नाम दें।

BANK ACCOUNT DETAIL OF BHARATIYA JNANPITH
Bank: **Axis Bank** Branch: **Defence Colony**
Account No: **357010100002783** Account Type: **Saving Account**
Mode of Electronic Transfer: RTGS / NEFT / IMPS any other
IFSC Code: **UTIB0000357** MICR Code: **110211036**

फोन : 011-41523423, 24626467 (एक्सटेंशन 27) ई-मेल : bookclub@jnanpith.net

साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंक : 233
जून-जुलाई 2025
पृष्ठ : 84 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

अनुक्रम

पैगी मोहन

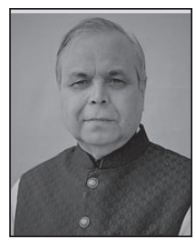

हरियश राय

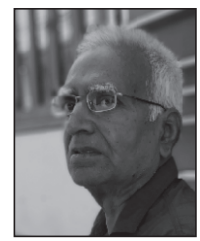

अशोक अग्रवाल

सविता सिंह

मनीषा कुलश्रेष्ठ

महाश्वेता देवी

आलेख
हिन्दी-उर्दू–जुड़वाँ भाषाओं की कहानी : पैगी मोहन / 04
उर्दू साहित्य व पत्रकारिता में आधुनिकता : डॉ. असद रज़ा / 06

परिचर्चा
अदब की दुनिया और हिन्दी उर्दू की साझी विरासत : प्रस्तुति–सुधांशु गुप्त / 08

कहानी
पानी की मोटर : हरियश राय / 13
दीमक : राजेंद्र कुमार कनौजिया / 10
यूरेका ! : मुकुल जोशी / 21
कबड्डी : मनीषा कुलश्रेष्ठ / 26

संस्मरण
वन्याधिकारी और पथेर पांचाली के विभूति बाबू : अशोक अग्रवाल / 32
शरद जोशी और शाजापुर की इरफाना सिद्दीकी का चर्चित प्रेम विवाह : नरेंद्र गौड़ / 38

बांग्ला कहानी
द्रौपदी : महाश्वेता देवी / 40

कंबोडिया की कहानी
एक मामूली इन्सान : अज्ञात / 47

अमेरिकी कहानी
मूर्ख गिम्पेल : आइज़ैक बैशेविस सिंगर / 49

अंग्रेजी कहानी
बंदर का पंजा : डब्ल्यू.डब्ल्यू. जैकब्स / 57

कविता
वंशी माहेश्वरी / 63
सविता सिंह / 65
अनुराधा सिंह / 67
राजेन्द्र शर्मा / 69

दार्जिलिंग रेल
दार्जिलिंग रेल को मरने से बचाइए : अशोक ओझा / 71

पुस्तक समीक्षा
वरिष्ठ प्रेम की साझेदारी : स्वाति शर्मा / 73

स्मृति शेष
स्मृति शेष एम.टी. : डॉ. आरसु / 75

ज्ञान गरिमा के 81 वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ

हिन्दी-उर्दू : जुड़वाँ भाषाओं की कहानी

पैगी मोहन

पैगी मोहन

प्रसिद्ध लेखिका, भाषाविद और शिक्षाविद हैं। वे मूलतः ट्रिनिडाड और टोबैगो की रहने वाली हैं, लेकिन उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया है। उनका विशेष रुझान भाषाओं के विकास, संस्कृति और इतिहास की ओर है। वे भारतीय उपमहाद्वीप की भाषाओं, विशेष रूप से हिन्दी, उर्दू और संस्कृत के प्रभाव और उनके ऐतिहासिक विकास पर गहराई से अध्ययन करती हैं।

उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'Wanderers, Kings, Merchants: The Story of India through Its Languages' है, जिसमें उन्होंने भारत के इतिहास को भाषाओं के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है।

उत्तर भारत की आधुनिक भाषाओं की कहानी की शुरुआत 12वीं शताब्दी से ठीक पहले के समय की है। वह अलग समय था, जब उच्च शासक वर्ग क्षेत्रीय प्राकृत में बोलता और लिखता था और अपने दरबारों में संस्कृत साहित्य को संरक्षण देता था। आम लोग पुरानी स्थानीय भाषाएँ बोलते थे, जो पूर्व में आदिवासी भाषाओं से जुड़ी हुई थीं और पश्चिम में सिंधु घाटी सभ्यता की भाषाओँ से, जो अभी भी जीवित थीं, परन्तु अलिखित और ऐतिहासिक अभिलेखों से लुप्त हो चुकी थीं। लेकिन इस दौरान ये छोटी स्थानीय भाषाएँ प्राकृत से शब्दावली ग्रहण कर रही थीं, जिस तरह से आज के समय में हिंग्लिश अंग्रेजी शब्दों और वाक्यांशों को आत्मसात कर रही है। इस समय के दौरान, शहरी लोगों ने कुछ ऐसी भाषाओँ में सूचियाँ और कानूनी दस्तावेज़ लिखना आरम्भ किया, जिनमें हमें उन भाषाओं की झलक मिलती है, जो आज बोली जाने वाली भाषाओँ से काफ़ी मिलती-जुलती हैं।

प्राकृत में बोलने वाली और संस्कृत साहित्य को संरक्षण देने वाली पुरानी व्यवस्था इस समय संकट में थी, जैसे कोई आख़िरी साँसें लेता डायनासोर। और फिर, 12वीं सदी में, उत्तर भारत के कई हिस्सों में एक नया प्रतिस्पर्धी उभरा। वर्तमान उज्बेकिस्तान से आए तुर्कों ने छोटे भंगशील राज्यों को हराने और सल्तनत स्थापित करने के लिए अंतिम अभियान तेज़ किये। जब मध्य एशियाई लोग यहाँ आए, तो वे उज़बेक बोलते थे और जो लोग पढ़े-लिखे थे, वे फ़ारसी भी जानते थे। उनके पास पुरानी प्राकृत का समर्थन करने का कोई कारण नहीं था। जल्द ही सल्तनत ने नए कवियों और गीतकारों को अपने दरबार में आमंत्रित करना शुरू कर दिया, और उनकी भाषाओं को पनपने के लिए ज़रूरी जगह और हवा दी। दिल्ली क्षेत्र में एक नई भाषा पहले ही उभर चुकी थी, इसे हम फिलहाल 'देहलवी' का नाम देते हैं। इसने ब्रज और अवधी जैसी अन्य नई भाषाओं के साथ बड़े क्षेत्र में जगह साझा की, लेकिन इसकी दूसरी भाषाओँ पर एक बढ़त थी–अवस्थिति। यह राजधानी की स्थानीय भाषा थी। नए प्रवासियों ने, भारतीय इतिहास में सभी प्रवासियों की तरह, अपनी 'उच्च' भाषा को संभाले रखा, और अपनी पुरानी स्थानीय भाषा को छोड़ दिया। उन्होंने फ़ारसी को बनाए रखा, लेकिन अपनी दैनिक बातचीत के लिए उज़्बेक की जगह देहलवी का इस्तेमाल किया। उन्होंने इसे पाया, इसे पसंद किया, और इसका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, जिसमें कुछ फ़ारसी शब्द भी शामिल थे। अमीर ख़ुसरो की कुछ कविताएँ हमें इस भाषा की झलक देती हैं–

खुसरो दरिया प्रेम का उलटी वा की धार,
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।

देहलवी एक बोलचाल की भाषा थी, लेकिन जल्द ही लोगों ने इसमें लिखना शुरू कर दिया। हालांकि गंभीर साहित्य फ़ारसी और संस्कृत में ही लिखा जाता

यह अंग्रेज ही थे जो उर्दू में फ़ारसी शब्दों और पुरानी कानूनी प्रणाली, जिसका वे अभी भी प्रयोग कर रहे थे, से असहज थे। उन्होंने 1900 में उर्दू के 'शुद्धिकरण' के लिए उर्दू के फ़ारसी शब्दों को अपनी पसंदीदा भाषा संस्कृत की शब्दावली से बदलने का फैसला किया। उसी वर्ष, सरकार ने एक आदेश पारित किया जिसमें 'नागरी और फ़ारसी अक्षरों' या लेखन प्रणालियों के संदर्भ को 'हिन्दी और उर्दू भाषाओं' के रूप में पुनर्लिखित किया गया। हिन्दी और उर्दू को दो अलग-अलग भाषाओं में विभाजित करने का कारण ठीक उसी कार्यालय ज्ञापन से जुड़ा है, जिसे उस समय प्रेस में 'अनजाने में' और 'एक ग़लती' के रूप में वर्णित किया गया था।

रहा। इसे फ़ारसी लिपि, और कैथी और महाजनी जैसी स्थानीय लिपियों में लिखा जाता था। समय के साथ इसे 'हिन्दी' कहा जाने लगा। 'हिंदवी' नहीं, जिसे खुसरो ने उन सभी स्थानीय भाषाओं को कहा जो फ़ारसी नहीं थीं। यह हिन्दी थी और पुराने और नए लोग सभी इसका इस्तेमाल करते थे।

सदियों बाद, मुग़लकाल में, औरंगज़ेब के शासनकाल के दौरान, दिल्ली के पास नारनौल के एक कवि जाफर ज़तल्ली ने एक व्यापक वर्ग के लिए लिखने का सपना देखा। यह सरकार की आलोचना करने वाली कविता थी, इसलिए इसे लोगों की समझ में आने वाली भाषा में ही होना था–'बोलचाल वाली हिन्दी' में, लेकिन उन्हें शब्दों की ज़रूरत थी। अभी तक वे केवल फ़ारसी में ग़ज़लें लिख रहे थे, इसलिए फ़ारसी वह स्रोत बन गई, जहाँ वे नए शब्दों और लगभग सभी संज्ञाओं के लिए बार-बार जाते थे। बोली जाने वाली हिन्दी की मूल ऑपरेटिंग प्रणाली अपरिवर्तित ही थी।

अगरचे हम कूड़ाओ कलाकारस्त,
बहिन्दी-दशिंडी ज़ुबान
वा लेकिन किसी ने भली ये कही,
जिसे पियू चाहे, सुहागन वही

(ऐसा लग सकता है कि यह राजधानी की स्थानीय भाषा थी, यह बकवास हिन्दी-विंदी भाषा लेकिन जैसा कि वे सही कहते हैं–प्रेमी जिससे प्यार करता है, वही सुहागन बन जाती है।)

1780 में कवि मुस'हफ़ी ने लखनऊ में लिखते हुए इस नई भाषा का नाम 'उर्दू' रखा। अब जबकि उर्दू एक साहित्यिक भाषा बन चुकी थी, इसमें फ़ारसी से नयी संज्ञाओं का समावेश होने लगा। मिर्ज़ा ग़ालिब ने दिल्ली में लिखते हुए इसे इतना ऊँचा बना दिया कि कई कवियों, यहाँ तक कि दिल्ली दरबार के दूसरे कवियों को भी इसे समझने में दिक्कत हुई। लेकिन जिस उर्दू में वे बोलते थे और दोस्तों को पत्र लिखते थे, वह एक ऐसी भाषा थी जिसे हम पहचान सकते हैं: इंसाफ़ करो, लिखूँ तो क्या लिखूँ? कुछ लिख सकता हूँ?...बस, इतना ही है कि अब तक हम-तुम जीते हैं। ज्यादा इस से न तुम लिखोगे, न मैं लिखूंगा। यह अंग्रेज ही थे जो उर्दू में फ़ारसी शब्दों और पुरानी कानूनी प्रणाली, जिसका वे अभी भी प्रयोग कर रहे थे, से असहज थे। उन्होंने 1900 में उर्दू के 'शुद्धिकरण' के लिए उर्दू के फ़ारसी शब्दों को अपनी पसंदीदा भाषा संस्कृत की शब्दावली से बदलने का फैसला किया। उसी वर्ष, सरकार ने एक आदेश पारित किया जिसमें 'नागरी और फ़ारसी अक्षरों' या लेखन प्रणालियों के संदर्भ को 'हिन्दी और उर्दू भाषाओं' के रूप में पुनर्लिखित किया गया। हिन्दी और उर्दू को दो अलग-अलग भाषाओं में विभाजित करने का कारण ठीक उसी कार्यालय ज्ञापन से जुड़ा है, जिसे उस समय प्रेस में 'अनजाने में' और 'एक ग़लती' के रूप में वर्णित किया गया था।

आप दो जीवन रूपों को क्या कहते हैं जो एक भ्रूण के रूप में शुरू हुए, लेकिन दो में विभाजित हो गए? हमशक्ल जुड़वाँ। विचारों, विकल्पों या जीवन की कहानी के संदर्भ में समान नहीं–हमशक्ल जुड़वाँ को अलग-अलग पहचानना अक्सर आसान होता है। लेकिन वे जो भी बन जाते हैं, और जहाँ भी जाते हैं, वे हमेशा आनुवंशिक स्तर पर समान ही रहेंगे। दोनों के बीच अंग प्रत्यारोपण ऊतक अस्वीकृति का कारण नहीं बनता है। भाषाई दृष्टि से, यह मूल व्याकरण और मूल ध्वनियाँ हैं। अपनी जीवन यात्रा में इन दो भाषाओं द्वारा प्राप्त सभी संज्ञाएँ, उनके द्वारा अपनाई गई अलग-अलग लेखन प्रणालियों का उनकी आनुवंशिकी से कोई लेना-देना नहीं है। उर्दू ने फ़ारसी से कुछ व्यंजन लिए हैं: ख़ै, ग़ैन और क़ाफ़। लेकिन जब हम इन विदेशी ध्वनियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम अधिक महत्वपूर्ण तथ्य को भूल जाते हैं कि उर्दू में पश्चकुंचन या रेट्रोफ़्लेक्शन है: त और ट, और ड और द अलग-अलग ध्वनियाँ हैं: 'दांत' और 'डाँट' अलग-अलग शब्द हैं। और यही इस बात की अंतिम कसौटी है कि कोई भाषा भारतीय है या नहीं, क्योंकि इसका इतिहास 70,000 साल पहले अफ्रीका से यहाँ आकर बसने वाले पहले लोगों से जुड़ा है। क्या कोई भाषा इससे ज्यादा भारतीय हो सकती है?

अनुवाद : स्वाति शर्मा